ISSN 2455-5169

परिवर्तन : साहित्य, संस्कृति एवं सिनेमा की वैचारिकी

सम्पादकीय

आश्चर्य या विस्मय भाव, विभाव से ठीक पहले होने वाली प्रक्रिया है...

-महेश सिंह

मनुष्य जब इस धरती पर आया होगा तब उसके पास पाने के सिवा खोने के लिए कुछ नहीं रहा होगा। हर घड़ी, हर पल वह जिस भी चीज से परिचित हो रहा होगा सिवाय आश्चर्य के उसके मन में अन्य किसी भाव के आने की सम्भावना शून्य के बराबर रही होगी। यदि यह बात सोलह आने सच मान लिया जाए तो रस के स्थायी भावों के उत्पत्ति की प्रक्रिया में जो सबसे पहला भाव आता होगा वह आश्चर्य या विस्मय ही हो सकता है। इस दृष्टि से प्रथम स्थायी भाव आश्चर्य को माना जा सकता है। आज भी जब पहली बार किसी चीज से हमारा परिचय होता है तो हमारे मन में जो सबसे पहला भाव उत्पन्न होता है वह आश्चर्य अर्थात विस्मय ही होता है। यह बात काव्यशास्त्र की दृष्टि भले ही सच साबित न हो लेकिन सर्वप्रथम बिना किसी पूर्व ज्ञान के किसी भी चीज से परिचय होने के आधार पर यह माना जा सकता है कि मनुष्य के मन में उस दौरान सबसे पहला उत्पन्न होने वाला भाव आश्चर्य ही है।

अब 'रति' को ही लेलें; मनुष्य का जब पहली बार अपने विपरीत लिंगी से परिचय हुआ होगा तो उसके मन में एक दूसरे की शारीरिक बनावट को देखकर रति या प्रेम नहीं उपजा होगा बल्कि आश्चर्य का भाव आया होगा। इसी तरह जब उस शरीर के लिए अलंकरण की व्यवस्था हुई होगी तब उस समय अलंकृत सुंदरता को देखकर मन में प्रेम के स्थान पर सर्वप्रथम आश्चर्य ही रहा होगा। आज भी स्त्री और पुरुष जब एक दूसरे को देखते हैं और एक दूसरे की सुन्दरता पर मोहित होते हैं तब पहले-पहल उनके मन में आने वाला भाव आश्चर्य ही होता है। इसके बाद ही रति भाव की प्रक्रिया शुरू होती है।

'शोक' को ले लिया जाए; पहली बार जब कोई मनुष्य मरा होगा तब उसे देखने वाले मनुष्य के मन में शोक का भाव तो बिल्कुल ही नहीं होगा। आश्चर्य का भाव भी हो सकता है देर से आया हो, क्योंकि जबतक मरने का मतलब पता नहीं होता तबतक आश्चर्य की भी सम्भावना नहीं ही रही होगी। हाँ, इस बात का आश्चर्य जरूर हुआ होगा कि 'आखिर ये क्या हो गया !' आज भी यदि कोई मर जाए तो सबसे पहले आश्चर्य होगा फिर शोक की प्रक्रिया शुरू होगी। तो यहाँ भी सर्वप्रथम आश्चर्य भाव ही है।

इसी तरह 'हास' को भी देखा जा सकता है। किसी भी परिस्थिति में हास तभी उत्पन्न होगा जब उस विषय से संबंधित पूर्व ज्ञान हो। अर्थात शुरू में मनुष्य जब पहली बार किसी चीज से परिचित हुआ होगा, जिससे उसके मन में हास का भाव आये, उससे पहले उसे देखकर उसके मन में आश्चर्य का ही जन्म हो सकता है। आज भी किसी को कोई हँसने वाली बात बताइये और सामने वाले को उस बात का सन्दर्भ न पता हो, तो उसे हँसी तो बिल्कुल ही नहीं आएगी। लेकिन सन्दर्भ बताते ही वह हँसने लगेगा। इसमें भी उस सन्दर्भ विशेष का ज्ञान होते ही सबसे पहले आश्चर्य होगा फिर हास का भाव आएगा।

आइये 'उत्साह' को देखते हैं; तो उत्साह भी उसी स्थिति में उत्पन्न हो सकता है जब उस परिस्थिति विशेष का ज्ञान हो। पढ़ने लिखने का उत्साह तभी होगा जब पढ़ने लिखने का लाभ पता होगा, धर्म- कर्म में उत्साह का भाव तभी आएगा जब धर्म-कर्म से लाभ का ज्ञान होगा। शत्रु के खिलाफ लड़ने का भाव भी तभी उत्पन्न हो सकता है। जब शत्रु से उत्पन्न खतरे का ज्ञान होगा। अब इस तरह के लाभ हानि का ज्ञान होने के दौरान जो पहला भाव होगा वह भी आश्चर्य का ही हो सकता है। आश्चर्य होने बाद ही उत्साह की प्रक्रिया शुरू होगी।

'भय' को भी देख लीजिये; आज भी नवजात शिशु को जब तक साँप के बारे में जानकारी नहीं होती तबतक उसके मन में उसके प्रति भय का किसी भी तरह से प्रवेश असम्भव है। लेकिन जैसे ही उस शिशु को साँप से खतरे का ज्ञान होगा वैसे ही उसके मन में उत्पन्न पहला भाव आश्चर्य का होगा ; अच्छा..! ऐसा है क्या..?

'क्रोध' भी पहली बार मनुष्य को आश्चर्य होने के बाद ही आया होगा। शुरुआत में किसी मनुष्य को जब कोई अन्य मनुष्य मारा होगा तब सबसे पहले उसे मारे जाने का आश्चर्य हुआ होगा। फिर मार से उत्पन्न दर्द का आश्चर्य, तत्पश्चात क्रोध के आने की प्रक्रिया शुरू हुई होगी। इस तरह यहाँ भी आश्चर्य का भाव सर्वप्रथम ही आया है। और इसकी ही प्रबल सम्भावना है।

'निर्वेद' अर्थात 'निराशा' के भाव के बारे में यदि बात की जाए तो अधिकतर आचार्य इसे संचारी भाव के अंतर्गत रखते हैं लेकिन कुछ इसे शांत रस का स्थायी भाव मानते हैं। फिर भी इसे यदि भाव माना जाए तो इसकी भी प्रक्रिया आश्चर्य के बाद की ही हो सकती है। क्योंकि निराश होने के लिए भी उसके कारणों से लाभ-हानि के बारे में जबतक ज्ञान नहीं होगा तबतक इस भाव के आने की कोई संभावना नहीं है। यहाँ लाभ-हानि के ज्ञान होने के दौरान जो सबसे पहला भाव मन में उत्पन्न होगा वह आश्चर्य भाव ही है।

'जुगुप्सा' के लिए भी शिशु का उदाहरण लिया जा सकता है। हम आज भी देख सकते हैं कि- शिशु किसी गंदी जगह में जाने से कोई परहेज नहीं करता। घर में ही यदि सड़े-गले फल या सब्जियां; जिन्हें हम कचड़े में फेंक देते हैं। यदि शिशु वहाँ पहुँच जाता है तो उस सड़े-गले फल या सब्जी को अपने हाथों से नोच-नोच कर खाने का प्रयास करने लगता है। लेकिन ज्यों ही उसे उस फल या सब्जी के सड़े होने का ज्ञान होता है। वह उससे घृणा करने लगता है। लेकिन उसके मन में घृणा का भाव आये उससे पहले उसके मन में फल या सब्जी सड़ी है का ज्ञान होने पर पहले आश्चर्य का भाव आता होगा। अतः यहाँ भी आश्चर्य, घृणा से पहले उत्पन्न होने वाला भाव कहा जा सकता है।

'वात्सल्य रति' और 'अनुराग' जैसे भाव तो अन्य सभी भावों की अपेक्षा और भी बाद की प्रक्रिया है। इन दोनों ही भावों के स्थायी होने में कई संचारी भावों के आलावा अन्य स्थायी भावों के भी अभिक्रिया से गुजरना पड़ता है। इसलिए इसमें भी आश्चर्य ही पहला भाव है; इसमें कोई संदेह की बात नहीं।

असल में आश्चर्य या विस्मय, उद्दीपन और आलम्बन विभाव से ठीक पहले होने वाली प्रक्रिया है। इसे वैज्ञानिक तरीके से परखे जाने की जरुरत है। यदि कहा जाए कि किसी भी भाव के उत्पन्न के लिए आश्चर्य भाव का सहयोग लेना पड़ता है तो इसमें कोई अतिशयोक्ति की बात नहीं।

ऊपर किये गए विश्लेषण को काव्यशास्त्र की दृष्टि में सही होने का दावा तो मैं नहीं करना चाहता लेकिन मनुष्य की मनोदशा; किसी भी चीज से प्रथम परिचय होने की दशा में, यह बात जरूर कह सकता हूँ कि काव्यशास्त्र में इस पक्ष पर भी विचार करने की जरुरत है।

खैर, चलिए इस अंक के बारे में बात करते हैं –

तो, यह अंक निश्चित तौर पर पठनीय और संगृहीत करने योग्य है। इस अंक के साथी रचनाकारों ने बड़ी ही गंभीरता और शोधपूर्ण तरीके से अपने लेखों/रचनाओं/शोध-पत्रों को तैयार किया है। मैं उम्मीद करता हूँ यह अंक शोधार्थियों के लिए काफी महत्वपूर्ण अंक होगा। बाकी सब आप पाठकों के निर्णय पर छोड़ता हूँ।